बैंकों में संपत्ति एवं दायित्व के प्रबंधन का अध्ययन

(आई.सी.आई.सी.आई.बैंक के विशेष संदर्भ में)

डॉ.संजय बाणकर

(सहा.प्राध्यापक वाणिज्य,शासकीय महाविद्यालय शाहपुर जिला–बैतूल म.प्र.)

सारांश– संपत्ति एवं दायित्व प्रबंधन (ए.एल.एम.) एक निर्दिष्ट शुद्ध ब्याज आय (एन.आई.आई.) प्राप्त करने के लिए संपत्ति और देनदारियों के समन्वय और नियंत्रण की एक गतिशील प्रक्रिया हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य आई.सी.आई.सी.आई.बैंक में संपत्ति और दायित्व के प्रबंधन की जांच करना हैं, एवं संपत्ति और दायित्व को बनाए रखने और प्रबंधित करने में शामिल समस्याओं को समझना हैं। शोध पत्र में द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया हैं, और यह शोध वर्णनात्मक हैं। अध्ययन अवधि वर्ष 2017–18 से 2021–22 तक पांच वित्तीय वर्षों की अवधि तक सीमित हैं। अध्ययन के लिए आवश्यक आंकड़े विभिन्न वेबसाइटों, आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की वार्षिक रिपोर्ट, विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से एकत्र किया गया हैं। विश्लेषण को सार्थक बनाने के लिए सांख्यिकीय उपकरण, अनुपात और प्रतिशत का उपयोग किया गया हैं। शोध पत्र में परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए टी– टेस्ट का उपयोग किया गया हैं। शोध पत्र के निष्कर्ष मे बैंक का पूंजी कारोबार अनुपातिक रूप से संतोषजनक हैं। बैंक ने नकद अनुपात को मानक के अनुसार नहीं रखा गया हैं, अर्थात नकदी को मानक से कम रखा गया हैं जो इंगित करता हे कि बैंक को अधिक नकदी शेष बनाए रखना चाहिए। बैंक ने शुद्ध लाभ की बढ़ती दर को बनाए रखा हैं,जो दर्शाता है कि अध्ययन अवधि के दौरान कंपनी ने अच्छा प्रदर्शन किया हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हे कि आई.सी.आई.सी.आई.बैंक निकट भविष्य में अधिक अनुकूल सेवा उत्पन्न करने के लिए तत्पर हैं। बैंक की बैलेंसशीट सुसंगत रही हैं, जो विकास और विस्तार का संकेत देती हैं।

परिचय– भारत में बैंकिंग की शुरुआत 18 वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हुई थी। पहले बैंक के रूप में बैंक ऑफ हिंदुस्तान (1770–1829) और द जनरल बैंक ऑफ इंडिया, वर्ष 1786 में स्थापित और असफल होने के बाद सबसे बड़ा बैंक और पुराना बैंक ,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया हैं। वर्ष जून 1806 में,बैंक ऑफ बंगाल बन गया। यह तीन प्रेसिडेंसी बैंकों में से एक था, अन्य दो बैंक ऑफ़ बॉम्बे और बैंक ऑफ़ मद्रास थे, ये तीनों ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर्स के तहत स्थापित किए गए थे। वर्ष 1921 में तीन बैंकों का विलय इंपीरियल बैंक ऑफ़ इंडिया के रूप में हुआ, जो भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1955 में भारतीय स्टेट बैंक बन गया। आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की स्थापना इंडस्ट्रियल क्रेडिट एंड इंवेस्टमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, एक भारतीय वित्तीय संस्थान द्वारा वर्ष 1955 में पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में की गई थी। मूल कंपनी का गठन 1955 में विश्व के संयुक्त उद्यम के रूप में किया गया था।

बैंक को शुरू में भारतीय बैंक के औद्योगिक ऋण और निवेश निगम के रूप में जाना जाता था, इससे पहले इसका नाम बदलकर संक्षिप्त आई.सी.आई.सी.आई.बैंक कर दिया गया था। आई.सी.आई.सी.आई.बैंक एक भारतीय बहुराष्ट्रीय बैंकिंग और वित्तीय सेवा कंपनी हैं,जिसका मुख्यालय मुंबई में हैं। यह संपत्ति और बाजार पूंजीकरण द्वारा भारत में निजी क्षेत्र का बड़ा बैंक हैं।

यह विभिन्न वितरण चैनलों के माध्यम से और अपनी विशेष सहायक कंपनियों के माध्यम से कॉर्पोरेट और खुदरा ग्राहकों को बैंकिंग उत्पादों और वित्तीय सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता हैं। आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की भारत में 2883 शाखाएँ हैं, एवं 10021 ए.टी.एम. का नेटवर्क हैं। बैंक की 19 अन्य देशों में भी उपस्थिति हैं। बैंक अपने हितधारकों और जनता की अपेक्षाओं को प्राप्त करने के लिए आवश्यक निर्णय लेने के लिए अधिक संगठित और लचीले दृष्टिकोण की सुविधा के लिए तत्पर हैं, और इसमें संपत्ति का प्रबंधन भी शामिल हैं।

संपत्ति और दायित्व प्रबंधन– (ए.एल.एम.) इंफ्रास्ट्रक्चर संपत्ति का प्रबंधन कर रहा हैं,ताकि ग्राहकों की इच्छा के अनुरूप सेवा स्तर की लगातार आपूर्ति करते हुए उनके स्वामित्व और संचालन की कुल लागत को कम किया जा सके। यह संपत्ति के दीर्घकालिक प्रबंधन के लिए एक व्यापक और संरचित दृष्टिकोण हैं। यह प्रभावी ढंग से रखरखाव, उन्नयन और संपत्ति के संचालन की एक व्यवस्थित प्रक्रिया को संदर्भित करता हैं। संपत्ति एवं दायित्व प्रबंधन बैंक को आर्थिक रूप से मजबूत करता हैं।

साहित्य समीक्षा–

अमित कुमार मीना और जयदीप (2014) शोध भारत में सार्वजनिक, निजी और विदेशी क्षेत्र के शीर्ष तीन बैंकों में चलनिधि अनुपात और परिसंपत्ति देयता प्रबंधन के विश्लेषण और तुलना पर केंद्रित अध्ययन किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में विश्लेषण तरलता अनुपात की गणना की है, उनका अध्ययन बैंकों के लिए परिपक्वता अंतराल निर्धारण पर आधारित था। इस अध्ययन के परिणामों मे सुझाव दिया कि भारत में कुल मिलाकर बैंकों की अल्पकालिक तरलता की स्थिति बहुत अच्छी है, और सभी बैंक अपनी अल्पकालिक दायित्वों को अपनी दीर्घकालिक संपत्तियों द्वारा वित्तपोषित कर रहे थे।

नारायण बासर (2014) ने अपने अध्ययन मे बताया है कि परिसंपत्ति–देयता प्रबंधन (एएलएम) एक बैंक के बाजार जोखिम को मापने, निगरानी और प्रबंधन के लिए एक व्यापक और गतिशील ढांचा हैं। इस अध्ययन में एएलएम तकनीकों की मदद से लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए जोखिमों की पहचान करने और उनका सामना करने और संपत्ति की गुणवत्ता बनाए रखने में बैंकों के बदलते दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने मैं मदद मिलती हैं।

डॉ कन्हैया सिंह (2013) ने अपने अध्ययन में संपत्ति–दायित्व की संरचना का प्रबंधन करने के लिए बैंकों द्वारा किए गए उपायों और रणनीतियों के प्रभाव का विश्लेषण किया ,और विशेष रूप से उनके प्रदर्शन पर इसका प्रभाव पड़ा। वर्ष 1997 में आर.बी.आई. के दिशा निर्देशों के कार्यान्वयन के बाद से बैंकों द्वारा परिसंपत्ति और दायित्वों के बे–मेल को कम करने के लिए गंभीर प्रयास किए गए हैं।

बी एन प्रताप (2013) के शोध में भारतीय बैंकिंग प्रणाली में संपत्ति और दायित्व प्रबंधन का संबंध है,यह अभी भी एक प्रारंभिक अवस्था में है। इस पृष्ठभूमि में,षोध का उद्देश्य भारतीय बैंकिंग प्रणाली में ए.एल.एम.दृष्टिकोण की स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण किया हं।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. संपत्ति और दायित्व को बनाए रखने और प्रबंधित करने में शामिल समस्याओं को समझना।
2. आई.सी.आई.सी.आई.बैंक में संपत्ति के वित्तपोषण पैटर्न का निर्धारण करने के लिए।
3. उपलब्ध निधियों के कुशल उपयोग और संपत्तियों और दायित्व के उचित प्रबंधन को करने के लिए।
4. विभिन्न संपत्तियों और दायित्व के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए।

अध्ययन की आवश्यकता–

1. अध्ययन का प्रमुख महत्व संपत्ति और दायित्व के रखरखाव का विश्लेषण करना है।
2. बैक में संपत्ति और दायित्व प्रबंधन का व्यावहारिक ज्ञान होने के लिए।

अध्ययन की सीमाएं–

1. अध्ययन में बैंक के केवल मौद्रिक पहलुओं पर विचार किया गया हैं।
2. अध्ययन समय और भौगोलिक बाधाओं के कारण बैंक के लाभ तक सीमित हैं।

अध्ययन की परिकल्पना– आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की वर्तमान संपत्ति और दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

शोध पद्धति– वर्तमान अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित हैं, और इसकी प्रकृति वर्णनात्मक हैं। अध्ययन की अवधि 2017–18 से 2021–22 तक पांच वित्तीय वर्षों की अवधि तक सीमित हैं। अध्ययन के लिए आंकड़ों का संग्रहण विभिन्न वेबसाइटों, आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की वार्षिक रिपोर्ट, विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से एकत्र किया गया हैं। शोधार्थी ने अध्ययन के लिए आई.सी.आई.सी.आई.बैंक लिमिटेड को चुना और विश्लेषण को सार्थक बनाने के लिए उन्नत सांख्यिकीय उपकरण अनुपात, माध्य और प्रतिशत का उपयोग किया। अध्ययन में टी टेस्ट की मदद से परिकल्पना का परीक्षण किया गया हैं।

आकडों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–

पूँजी आवर्त अनुपात (Capital Turnover Ratio) Rs. In "000"

Year	Revenue	Capital Employed	Capital Employed Turnover Ratio
2017-18	549,658,922	2,880,119,871	0.19
2018-19	634,011,926	2,736,833,403	0.23
2019-20	848,357,730	2,793,976,811	0.30
2020-21	891,626,638	2,391,370,404	0.37
2021-22	954,068,654	2,774,769,200	0.34
Total	**3,877,723,870**	**13,577,069,689**	

(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

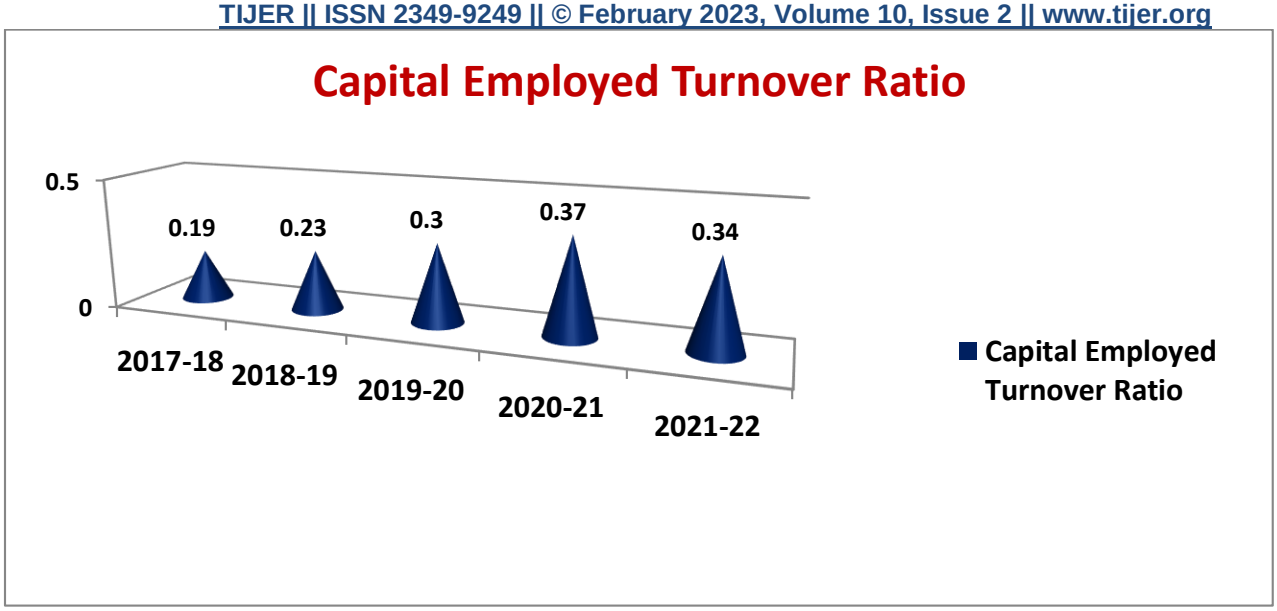

पूंजी आवर्त अनुपात दर्शाता हे कि बैंक ने अपनी कार्यशील पूंजी का कितनी कुशलता से उपयोग किया हैं। अध्ययन अवधि में बैंक के इस अनुपात में वर्ष 2017–18 से वर्ष 2020–21 तक लगातार वृद्धि हुई लेकिन वर्ष 2021–22 में 0.03 की कमी आई अगर हम बैंकों के पिछले 5 वर्षों औषध अनुपात देखे तो बैंक ने अपनी नियोजित पूंजी में सुधार किया हैं।

संपत्ति आवर्त अनुपात (Fix Asset Turnover Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Revenue**	**Fix Asset**	**Fix Asset Turnover Ratio**
2017-18	549,658,922	79,035,149	6.95
2018-19	634,011,926	79,314,287	7.99
2019-20	848,357,730	104,086,576	8.15
2020-21	891,626,638	108,092,581	8.25
2021-22	954,068,654	106,054,107	9.00
Total	**3,877,723,870**	**476,582,700**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

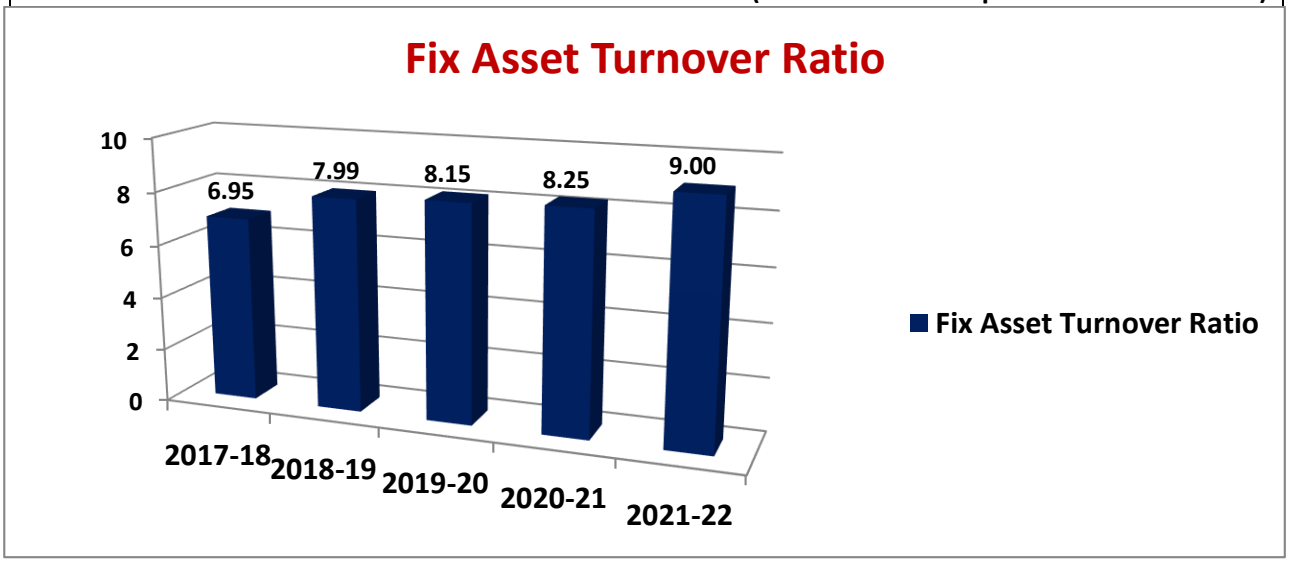

स्थाई संपत्ति आवर्त अनुपात उच्च होना बैंक की अच्छी स्थिति को दर्शाता हैं। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान यह अनुपात लगातार बढ़ा हैं, वर्ष 2017–18 में यह अनुपात 6.95 था जो बढ़कर वर्ष 2021–22 में 9.00 हो गया।

कुल संपत्ति आवर्त अनुपात (Total Asset Turnover Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Revenue**	**Total Asset**	**Total Asset Turnover Ratio**
2017-18	549,658,922	11,242,810,402	0.05
2018-19	634,011,926	12,387,938,907	0.05
2019-20	848,357,730	13,772,922,323	0.06
2020-21	891,626,638	15,738,122,446	0.06
2021-22	954,068,654	17,526,373,837	0.05
Total	**3,877,723,870**	**70,668,167,915**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

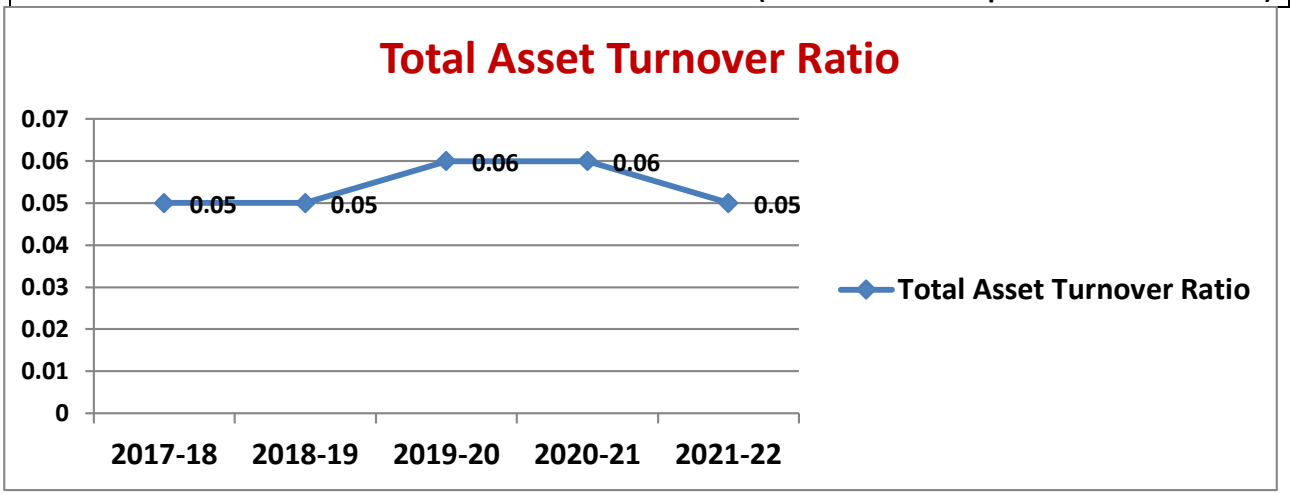

कुल संपत्ति आवर्त अनुपात यह दर्शाता हे कि बैंक ने अपनी कुल संपत्ति का उपयोग कितना किया अध्ययन अवधि के दौरान यह देखने में आया है कि आई.सी.आई.सी.आई.बैंक का यह अनुपात में कुछ ज्यादा कमी वृद्धि नहीं देखी गई और यह 1 से कम हैं जो दर्शाता हे कि बैंक ने अपनी कुल संपत्ति का उपयोग नहीं किया हैं।

चल संपत्ति आवर्त अनुपात (Current Asset Turnover Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Net Revenue**	**Current Asset**	**Current Asset Turnover Ratio**
2017-18	723,855,248	6,682,914,656	0.11
2018-19	779,133,562	7,487,950,391	0.10
2019-20	1,497,861,031	9,234,109,449	0.16
2020-21	1,611,921,920	9,402,685,553	0.17
2021-22	1,575,363,168	10,916,829,237	0.14
Total	**6,188,134,929**	**43,724,489,286**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

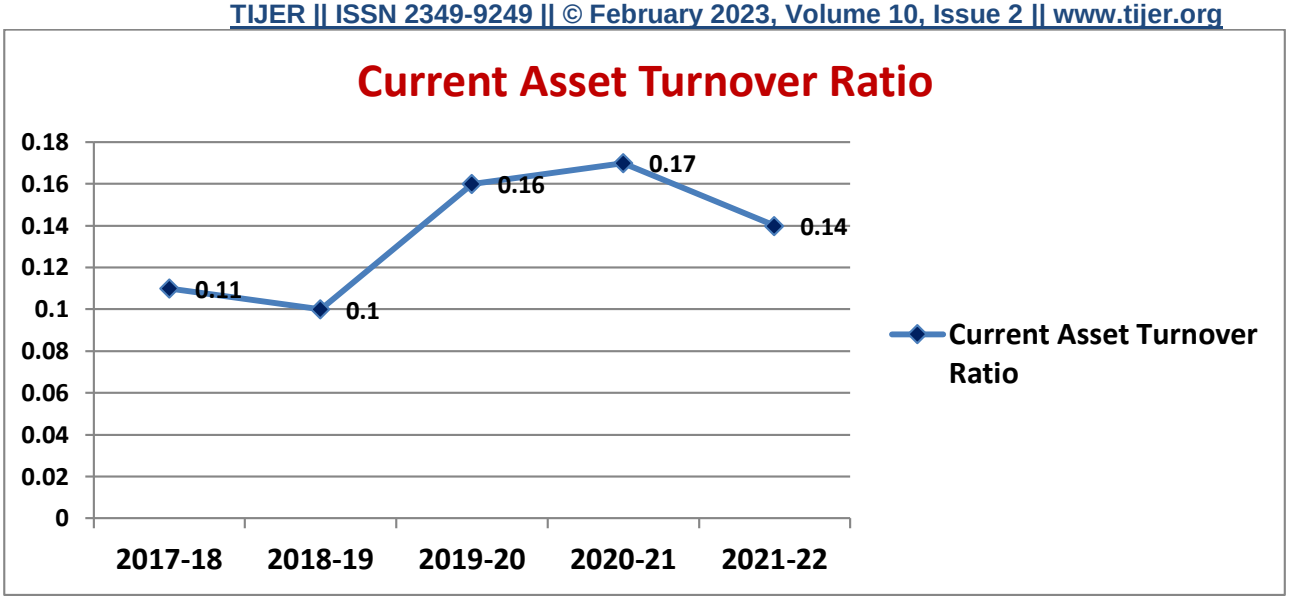

चल संपत्ति आवर्त अनुपात जितना अधिक होता हैं उतना अच्छा माना जाता हैं वर्ष 2017–18 में बैंक का यह अनुपात 0.11 हैं जो वर्ष 2019–20 में बढ़कर 0.16 और वर्ष 2020–21 मे 0.17 हो गया जो सर्वोच्च था। उपरोक्त अनुपात से पता चलता है कि बैंक ने वर्ष 2020–21में सबसे अच्छा प्रदर्शन किया हैं।

रोकड़ आवर्त अनुपात (Cash Turnover Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Net Revenue**	**Cash**	**Cash Turnover Ratio**
2017-18	723,855,248	331,023,817	2.19
2018-19	779,133,562	378,580,118	2.06
2019-20	1,497,861,031	352,839,592	4.25
2020-21	1,611,921,920	460,311,902	3.50
2021-22	1,575,363,168	601,208,198	2.62
Total	**6,188,134,929**	**2,123,963,627**	
(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)			

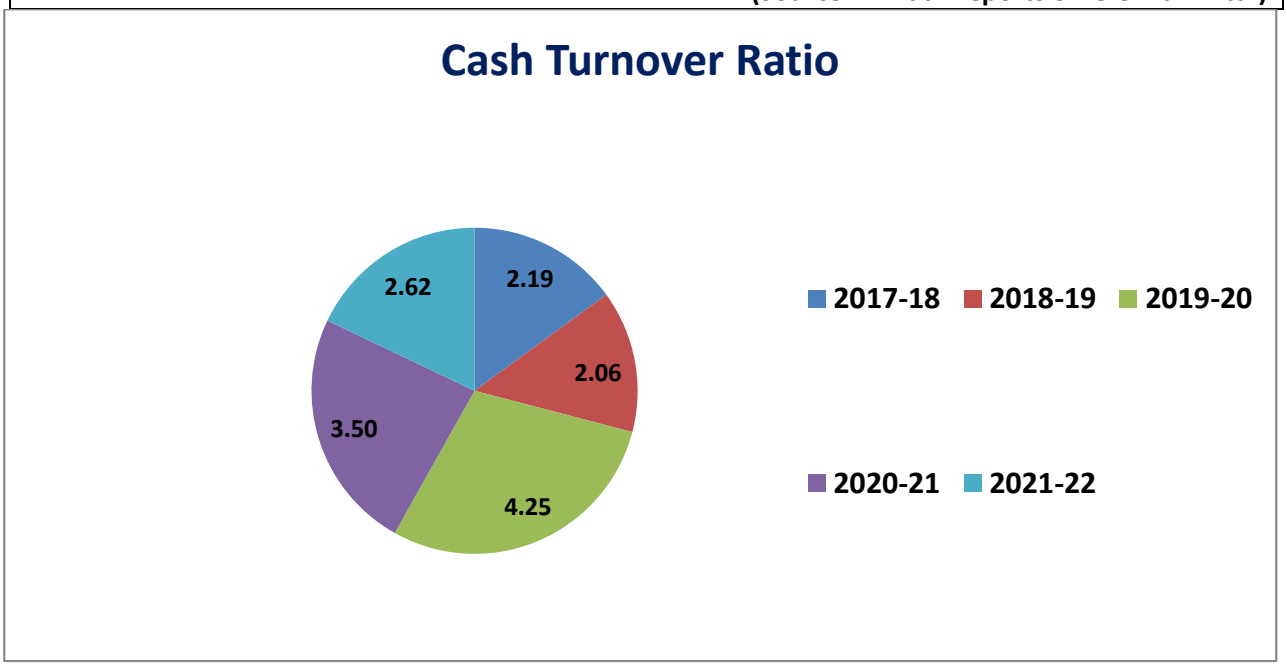

रोकड़ आवर्त अनुपात बैंक के नकद संसाधनों के प्रभावी उपयोग को दर्शाता हैं अध्ययन अवधि में यह देखा गया कि वर्ष 2017–18 में यह अनुपात 2.19 था जो वर्ष 2019 में 4.25 हो गया अगर हम 5 वर्षों की तुलना करे तो यह सबसे अधिक हैं अध्ययन अवधि में यह पता चलता हे कि बैंक को अधिक नकदी को बनाए रखना पड़ा हैं। 4 मई 2022 को वृद्धि के बाद भारत में सी.आर.आर. 4.50 हो गया है। इसका मतलब है कि अगर किसी बैंक में 100 रुपये डिपॉजिट होते हैं, तो उसे आर. बी.आई. के पास 4.50 रुपये नकद जमा रखने होंगे।

चालू अनुपात (Current Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Current Asset**	**Current Liabilities**	**Current Ratio**
2017-18	6,682,914,656	5,911,771,742	1.13
2018-19	7,487,950,391	6,907,758,075	1.08
2019-20	9,234,109,449	8,189,674,681	1.13
2020-21	9,402,685,553	9,912,956,354	0.95
2021-22	10,916,829,237	11,338,208,220	0.96
Total	**43,724,489,286**	**42,260,369,072**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

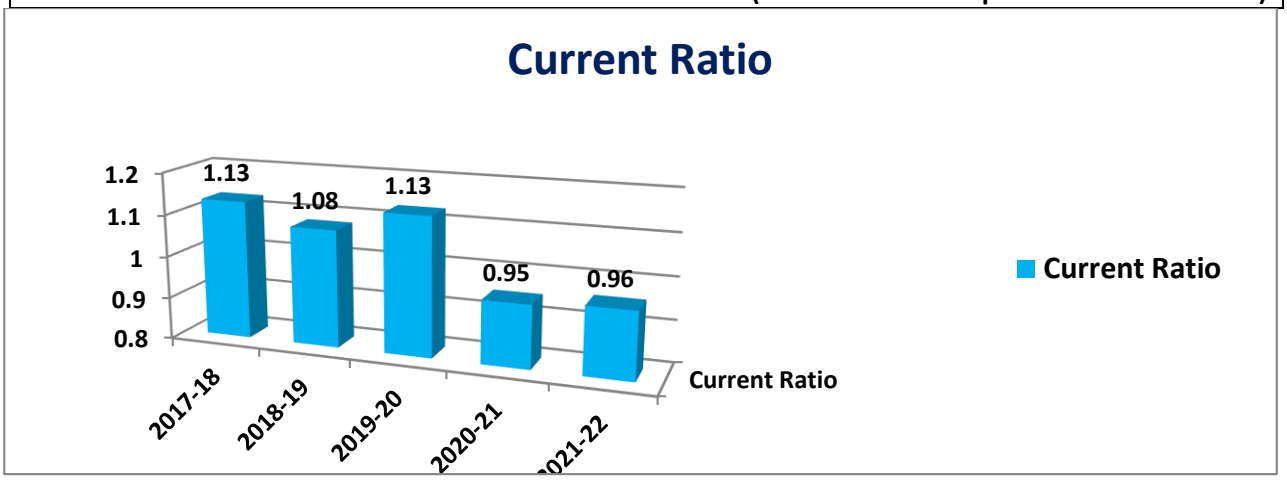

चालू अनुपात में अध्यन अवधि के दौरान कमी वृद्धि दर्ज की गई। यह अनुपात बैंक की वर्तमान संपत्तियों के संबंध में अपनी वर्तमान दायित्व को पूरा करने की क्षमता को मापता हैं। इसका तात्पर्य दिन–प्रतिदिन की तरलता से हैं, जो बैंक के पास अपने कामकाज के लिए हैं। यह अनुपात अपने वर्तमान दायित्वों को पूरा करने के लिए तरल के रूप में देखा जाता हैं। वर्ष 2017–18 और 2019–20 मे यह अनुपात 1.13 था जो पिछले 5 वर्षों में सर्वोच्च है वर्ष 2021–22 में यह अनुपात 0.96 हो गया जो पिछले 5 वर्षों में सबसे कम हैं।

शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio)			Rs. In "000"
Year	**Net Profit**	**Net Revenue**	**Net Profit Ratio**
2017-18	255,223,605	723,855,248	0.35
2018-19	218,585,570	779,133,562	0.28
2019-20	258,103,827	1,497,861,031	0.17
2020-21	375,201,520	1,611,921,920	0.23
2021-22	543,485,564	1,575,363,168	0.34
Total	**1,650,600,086**	**6,188,134,929**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

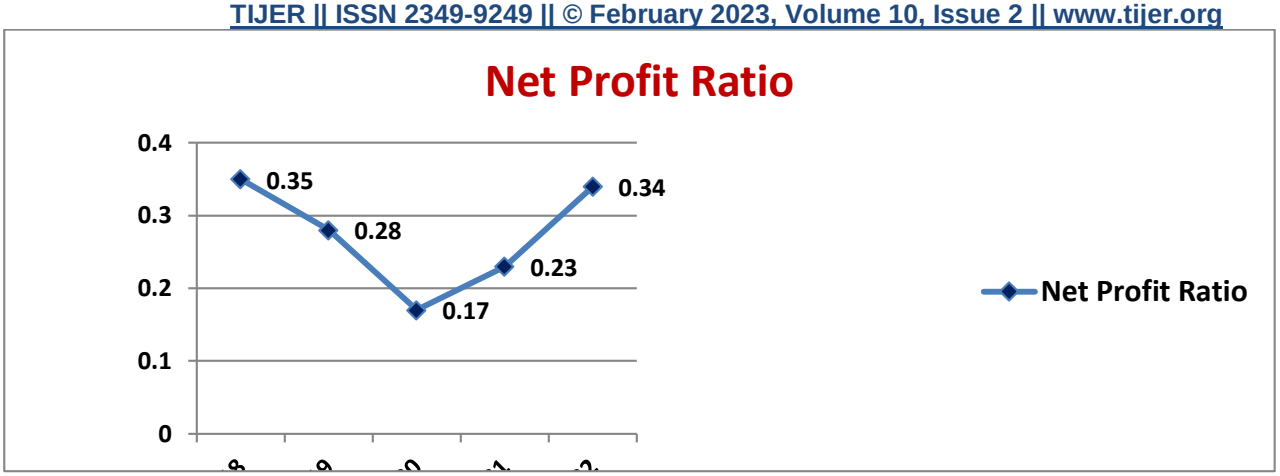

बैंक का शुद्ध लाभ अनुपात वर्ष 2017–18 में 0.35 था जो वर्ष 2018–19 में घटकर 0.28 हो गया एवं वर्ष 2019–20 मे 0. 17 हुआ जबकि वर्ष 2021–22 मे पुनः बढ़कर 0.34 हुआ 2 वर्ष का कम अनुपात कोरोनाकाल मे मंदी की स्थिति में हुआ वर्ष 2021–22 में अच्छा अनुपात दर्शाता है कि बैंक ने अपनी स्थिति में पुनः अच्छा सुधार किया हैं।

चालू संपति पर स्थाई संपति का अनुपात (Current Asset to Fix Asset Ratio) Rs. In "000"			
Year	**Current Asset**	**Fix Asset**	**Current Asset to Fix Asset Ratio**
2017-18	6,682,914,656	79,035,149	84.56
2018-19	7,487,950,391	79,314,287	94.41
2019-20	9,234,109,449	104,086,576	88.72
2020-21	9,402,685,553	108,092,581	86.99
2021-22	10,916,829,237	106,054,107	102.94
Total	**43,724,489,286**	**476,582,700**	
			(Source: Annual Reports of ICICI Bank Ltd.)

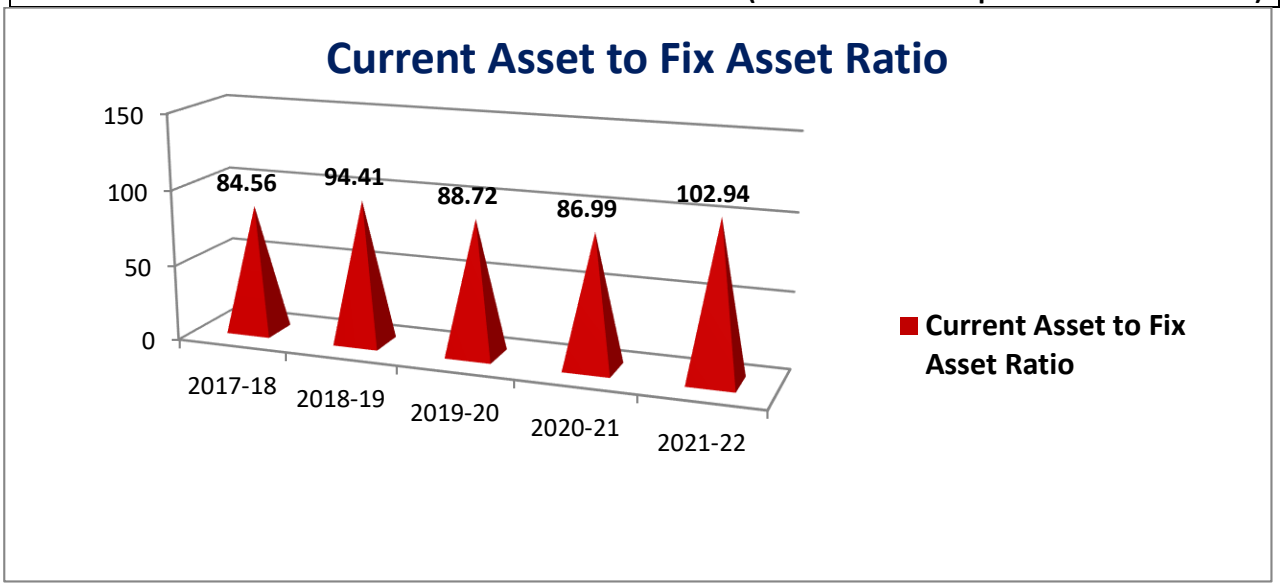

चालू संपत्तियों पर स्थाई संपत्ति का अनुपात से पता चलता है कि वर्ष 2017–18 मे यह अनुपात 84.56 था जो बढ़कर वर्ष 2018–19 मे 94.41 एवं वर्ष 2021.22 में 102.94 हो गया जो दिखाता है कि बैंक के पास व्यवसाय चलाने के लिए पर्याप्त वर्तमान संपत्ति अर्थात चालू संपत्ति हैं।

शुन्य परिकल्पना का परीक्षण–

शुन्य परिकल्पना का परीक्षण स्टूडेन्ट् टी परीक्षण के माध्यम से किया हैं। जो इस प्रकार हैं।

❖ **H_0 आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की वर्तमान संपत्ति और दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।**

$$\mathbf{r = 0.768}$$

$$\mathbf{t = \frac{r}{\sqrt{1-r^2}} \times \sqrt{n-2}}$$

$$\mathbf{= \frac{0.768}{\sqrt{1-0.768^2}} \times \sqrt{5-2}}$$

$$\mathbf{= \frac{0.768}{0.641} \times 1.73}$$

$$\mathbf{t = \ 2.07}$$

t का परिकलित मान (Calculated Value) = 2.07

t का सारणी मान (Table Value) 0-05 = 1.74

Hence Table Value Calculated Value =(1.74<2.07)

शोध अध्ययन के लिए ली गई शुन्य परिकल्पना कि आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की वर्तमान संपत्ति और दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। अतः शोध के अध्ययन में ली गई शून्य परिकल्पना असत्य है, क्यांकि यहाँ टी की गणना की वेल्यु, टी के सारणीयन मुल्य से अधिक है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

1. स्थाई संपत्ति आवर्त अनुपात मैं हर साल बढ़ोतरी हो रही हैं, जो दर्शाता हे कि बैंक द्वारा स्थाई अथवा अचल संपत्तियों का उपयोग उत्तम रूप से किया जा रहा हैं। अचल संपत्तियों का अच्छा उपयोग बैंक के वर्तमान संपत्ति प्रबंधन को अच्छा दर्शाता हैं।
2. आई.सी.आई.सी.आई.बैंक द्वारा नकद अनुपात मानक से कम रखा गया हैं,जो दर्शाता हे कि बैंक को अधिक नकदी बनाए रखना चाहिए।
3. अचल अथवा स्थाई संपत्ति की वर्तमान स्थिति संतोषजनक हैं, जो बताता हे कि बैंक ने व्यवसाय चलाने का मानक बनाए रखा हैं।
4. अध्ययन अवधि में यह स्पष्ट हुआ है कि आई.सी.आई.सी.आई. बैंक निकट भविष्य में अधिक अनुकूल सेवा देने हेतु तत्पर हैं। आई.सी.आई.सी.आई.बैंक का आर्थिक चिट्ठा सुसंगत हैं।
5. आई.सी.आई.सी.आई.बैंक द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों की सेवा के लिए की गई पहल व्यवसाय के लिए बेहतर वातावरण विकसित करने में बहुत सहायक सिद्ध होगी।
6. बैंक की अच्छी वित्तीय स्थिति बनाए रखने के लिए आरक्षित और अधिशेष में योगदान की मात्रा को बढ़ाना चाहिए।
7. बैंक ने गांव की अपेक्षा शहरी बैंकिंग के विकास में काफी वृद्धि की हैं, बैंक को ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवा बढ़ाना चाहिए जिससे बैंक अपनी आय में वृद्धि कर सकें।
8. बैंक को वर्तमान संपत्तियों और वर्तमान देनदारियों के प्रति बेहतर प्रबंधन किया जाना चाहिए वर्तमान में दोनों के बीच कमजोर सकारात्मक संबंध हैं।
9. अध्ययन अवधि में देखा गया है कि बैंक के व्यय में वृद्धि हैं, बैंक को चाहिए कि अपनी गुणवत्ता में बिना कमी किए गैर व्यय में कमी लाना चाहिए बैंक अपने अपव्यय की पहचान करें और उसे कम करें।

10. बैंक को प्रौद्योगिकी के साथ.साथ नवाचार पर विशेष ध्यान देना चाहिए और अपने पोर्टफोलियो में सुधार करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. Bhavani Prasad, G. and Veena, V.D.2011, "NPAS in Indian banking sector trends and issues,"Journal of Banking Financial Services and Insurance Research, Volume No. 1, Issue 9, PP,67-84.
2. C.S. Balasubramaniam,2011 "Non Performing Assets and Profitability of Commercial Banks in India: Assessment and Emerging Issues"Journal of Research in Commerce & Management, Vol. 1, Issue 7, PP, 41-57
3. Anurag B Singh and Priyanka Tandon (2012), "Asset - Liability Management in Indian Banking Industry" Asia Pacific Journal of Marketing & Management Review,Vol.1, No. 3, pp.121-132
4. Prathap B N (2013) "An Empirical Study of Asset Liability Management by Indian Banks", Asia Pacific Journal,Volume No: 2, Issue: 4, pp.1-10.
5. Amit Kumar Meena and Joydip Dhar (2014), "An Empirical Analysis and Comparative Study of Liquidity Ratios and Asset-Liability Management of Banks Operating in India", International Journal of Social, Human Science and Engineering, Volume:8, pp-358-363
6. Annual Reports of Industrial credit and Investment Corporation of India(ICICI) ank Limited form (2017-18 to 2021-22)

NEWSPAPERS-

- Business Line
- Economic Times
- Business standards

WEBSITES -

- ✓ www.iciciltd.com
- ✓ www.wikipedia.com
- ✓ www.google.com